International Journal of Humanities, Commerce and Education
©PIJMS | Volume 2 | Issue 1 | January 2026 | ISSN: 3108-0456 (Online)
Available online at: https://ijhce.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i1.28

# रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता में राष्ट्रीय अस्मिता

**वंदना कुमावत**
सहायक आचार्य, हिंदी (अतिथि संकाय), राजकीय महाविद्यालय, मकराना
**Email**: peacecpf@gmail.com

**Received:** 10 January 2026 | **Accepted:** 27 January 2026 | **Published:** 30 January 2026

## सारांश

रामधारी सिंह 'दिनकर' आधुनिक हिंदी कविता के उन विशिष्ट कवियों में हैं जिनकी काव्य-चेतना राष्ट्रीय जीवन की धड़कनों से गहराई से जुड़ी हुई है। उनकी कविता भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, औपनिवेशिक दासता और सामाजिक-राजनीतिक अन्याय के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिरोध स्वर के रूप में उभरती है। दिनकर की रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना केवल भावनात्मक राष्ट्रप्रेम तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह संघर्ष, त्याग और आत्मसम्मान से युक्त सक्रिय चेतना का रूप धारण करती है। उनकी कविता जनसाधारण को निष्क्रियता से बाहर निकालकर आत्मगौरव और प्रतिकार की भावना से भर देती है।

दिनकर के लिए राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमाओं या राजनीतिक सत्ता का नाम नहीं है, बल्कि वह एक जीवंत सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और नैतिक सत्ता है। उनकी कविता में भारतीय संस्कृति, पौराणिक प्रतीकों, ऐतिहासिक चरित्रों और लोक-परंपराओं के माध्यम से राष्ट्रीय अस्मिता का पुनर्निर्माण किया गया है। *रश्मिरथी* का कर्ण, *कुरुक्षेत्र* का युद्ध और *हुंकार* का विद्रोही स्वर—ये सभी राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक बनकर उभरते हैं, जो अन्याय, विषमता और नैतिक पतन के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा देते हैं। इस प्रकार दिनकर की कविता सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की सुदृढ़ आधारभूमि तैयार करती है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में दिनकर की प्रमुख काव्य-कृतियों—*रेणुका*, *हुंकार*, *रश्मिरथी* और *कुरुक्षेत्र*—के आलोक में उनकी कविता में राष्ट्रीय अस्मिता के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है। इसमें वीर-रस, जनवादी चेतना, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और सामाजिक न्याय की अवधारणाओं को केंद्र में रखते हुए दिनकर की काव्य-दृष्टि की समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित किया गया है। यह अध्ययन प्रतिपादित करता है कि दिनकर की कविता न केवल अपने समय की आवाज़ है, बल्कि आज के सामाजिक और राष्ट्रीय संदर्भों में भी उतनी ही सार्थक और प्रेरणादायक बनी हुई है।

**बीज शब्द** : रामधारी सिंह दिनकर, राष्ट्रीय अस्मिता, राष्ट्रीय चेतना, हिंदी कविता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

## 1. भूमिका

बीसवीं शताब्दी का हिंदी साहित्य भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रीय जागरण की चेतना से गहरे रूप में अनुप्राणित रहा है। यह वह समय था जब देश औपनिवेशिक दासता के बंधनों में जकड़ा हुआ था और जनमानस राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर आत्मचिंतन की प्रक्रिया से गुजर रहा था। इस ऐतिहासिक परिवेश में साहित्य ने केवल सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति का साधन बने रहने से इंकार कर दिया और वह राष्ट्रीय आकांक्षाओं, जनभावनाओं तथा स्वतंत्रता की चेतना को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम बन गया। कवि और लेखक राष्ट्र के सजग प्रहरी के रूप में सामने आए और साहित्य सामाजिक परिवर्तन का औजार बन गया।

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

इसी राष्ट्रीय और वैचारिक पृष्ठभूमि में रामधारी सिंह 'दिनकर' का काव्य व्यक्तित्व विकसित हुआ। दिनकर को आधुनिक हिंदी कविता का सर्वाधिक ओजस्वी और तेजस्वी कवि माना जाता है, जिनकी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम, स्वाभिमान, संघर्ष और प्रतिरोध की चेतना मुखर रूप में व्यक्त होती है। उनकी कविता जनता को निष्क्रिय सहनशीलता से बाहर निकालकर आत्मसम्मान और संघर्ष की प्रेरणा देती है। 'हुंकार' और 'रेणुका' जैसी कृतियों में दिनकर का स्वर अन्याय, शोषण और कायरता के विरुद्ध एक सशक्त जनघोषणा के रूप में उभरता है, जिससे उनकी कविता राष्ट्रीय चेतना की सजीव अभिव्यक्ति बन जाती है।

दिनकर की राष्ट्रीय अस्मिता की अवधारणा केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह सांस्कृतिक पुनर्जागरण और सामाजिक न्याय की भावना से भी गहराई से जुड़ी हुई है। उनके लिए राष्ट्र का अर्थ केवल सत्ता-परिवर्तन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आत्मगौरव की पुनर्स्थापना और समाज के शोषित वर्गों को न्याय दिलाना है। इसी कारण उनकी कविता में पौराणिक और ऐतिहासिक प्रतीकों के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत किया गया है। इस प्रकार दिनकर की कविता राष्ट्रीय अस्मिता को एक व्यापक, समावेशी और संघर्षशील स्वर प्रदान करती है, जो उसे कालजयी और प्रासंगिक बनाता है।

## 2. राष्ट्रीय अस्मिता की अवधारणा

राष्ट्रीय अस्मिता का तात्पर्य उस सामूहिक आत्मबोध से है जिसके माध्यम से कोई राष्ट्र अपनी ऐतिहासिक स्मृति, सांस्कृतिक परंपराओं, भाषा, जीवन-मूल्यों और साझा अनुभवों को पहचानता है। यह अस्मिता किसी राष्ट्र की आत्मा का निर्माण करती है और उसे अन्य राष्ट्रों से विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय समाज की यह आत्मपहचान दबी हुई थी; विदेशी सत्ता ने न केवल राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित किया, बल्कि सांस्कृतिक हीनता-बोध भी उत्पन्न किया। ऐसे समय में हिंदी साहित्य ने राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया और जनता में आत्मगौरव तथा स्वाभिमान की भावना को पुनर्जीवित किया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य के इस दायित्व को स्पष्ट करते हुए कहा है कि,

"साहित्य जनता की चित्तवृत्तियों का प्रतिबिंब होता है।"[1]

शुक्ल का यह कथन राष्ट्रीय अस्मिता के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि जब जनता की चित्तवृत्तियाँ दासता और हीनता से ग्रस्त थीं, तब साहित्य ने उन्हें आत्मसम्मान और संघर्ष की दिशा प्रदान की। हिंदी साहित्य, विशेषतः कविता, राष्ट्रीय आत्मबोध का सशक्त माध्यम बनी, जिसने जनमानस को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से पुनः जोड़ने का कार्य किया।

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता में राष्ट्रीय अस्मिता इसी संघर्षशील और आत्मगौरव से युक्त चेतना के रूप में प्रकट होती है। दिनकर राष्ट्र को किसी जड़ राजनीतिक सत्ता के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत, चेतन और परिवर्तनकामी शक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी कविता में राष्ट्र अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करता हुआ, अपनी सांस्कृतिक गरिमा की रक्षा करता हुआ और सामाजिक न्याय की ओर अग्रसर दिखाई देता है। इस प्रकार दिनकर की राष्ट्रीय अस्मिता न केवल प्रतिरोध की चेतना है, बल्कि नव-निर्माण और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक शक्ति भी है।

## 3. दिनकर का काव्य और ऐतिहासिक संदर्भ

रामधारी सिंह 'दिनकर' का रचनाकाल भारतीय इतिहास के दो अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरणों—स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता-उत्तर—में फैला हुआ है। यह वह समय था जब एक ओर भारत औपनिवेशिक दासता के विरुद्ध संघर्ष कर रहा था, तो दूसरी ओर स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र-निर्माण की जटिल चुनौतियों से जूझ रहा था। दिनकर की कविता इस ऐतिहासिक संक्रमण काल की सजीव अभिव्यक्ति है। स्वतंत्रता आंदोलन, क्रांतिकारी चेतना, सामाजिक विषमता और राजनीतिक असंतोष उनकी काव्य-दृष्टि की मूल पृष्ठभूमि बनते हैं, जिससे उनकी रचनाएँ समय-सापेक्ष और युग-साक्षी बन जाती हैं।

स्वतंत्रता-पूर्व काल की कृतियों—विशेषतः *रेणुका* और *हुंकार*—में दिनकर का स्वर विद्रोह और प्रतिरोध से ओत-प्रोत दिखाई देता है। इन रचनाओं में वे औपनिवेशिक सत्ता, सामाजिक जड़ता और कायरता के विरुद्ध जनमानस को जाग्रत करते हैं। *हुंकार* की प्रसिद्ध पंक्ति—

"सिंहासन खाली करो कि जनता आती है"[2]

औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जनसत्ता की उद्घोषणा है। इसी प्रकार *रेणुका* में कवि दासता की मानसिकता को तोड़ने का आह्वान करता है, जिससे स्पष्ट होता है कि दिनकर की कविता स्वतंत्रता-संघर्ष की वैचारिक ऊर्जा से अनुप्राणित है।

स्वतंत्रता के पश्चात दिनकर की कविता का स्वर बदलता है, किंतु उसकी राष्ट्रीय चेतना कम नहीं होती। अब उनका ध्यान सत्ता-परिवर्तन से आगे बढ़कर नैतिकता, हिंसा, कर्तव्य और मानवीय मूल्यों के प्रश्नों पर केंद्रित हो जाता है। *कुरुक्षेत्र* में महाभारत के युद्ध को आधार बनाकर दिनकर युद्ध और शांति, हिंसा और करुणा के द्वंद्व पर गहन चिंतन करते हैं। युधिष्ठिर के मुख से कहलवाया गया यह कथन—

"विजय का उत्सव मनाना सरल है, पर उसके पाप का भार वहन करना कठिन।"[3]

स्वतंत्र भारत के नैतिक संकटों की ओर संकेत करता है।

इसी क्रम में *परशुराम की प्रतीक्षा* स्वतंत्र भारत में व्याप्त नैतिक पतन, अवसरवाद और सत्ता की निष्क्रियता पर तीखा व्यंग्य प्रस्तुत करती है। परशुराम यहाँ केवल पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि व्यवस्था के विरुद्ध प्रतीकात्मक प्रतिरोध की शक्ति हैं। कवि लिखता है—

"जब-जब धरा पर बढ़ता है अन्याय, तब-तब शस्त्र उठाता है परशुराम।"[4]

यह पंक्ति स्पष्ट करती है कि दिनकर स्वतंत्रता के बाद भी अन्याय के प्रति सजग और संघर्षशील बने रहते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि दिनकर की कविता अपने समय की ऐतिहासिक चेतना का सशक्त दस्तावेज़ है। उनकी रचनाएँ केवल भावनात्मक राष्ट्रप्रेम तक सीमित नहीं, बल्कि वे इतिहास, समाज और राजनीति के गहन अंतर्संबंधों को उजागर करती हैं। स्वतंत्रता-पूर्व काल में उनकी कविता संघर्ष और विद्रोह की प्रेरणा देती है, जबकि स्वतंत्रता-उत्तर काल में वह आत्ममंथन और नैतिक पुनर्निर्माण का आग्रह करती है। यही कारण है कि दिनकर की कविता न केवल अपने युग की आवाज़ है, बल्कि आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।

# 4. दिनकर की कविता में राष्ट्रीय अस्मिता के प्रमुख आयाम

## 4.1 वीर-रस और राष्ट्रीय स्वाभिमान

रामधारी सिंह 'दिनकर' को आधुनिक हिंदी कविता का सर्वाधिक प्रभावशाली वीर-रस कवि माना जाता है। उनकी कविता में वीरता केवल युद्ध-कौशल या शौर्य-प्रदर्शन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह अन्याय, दमन और शोषण के विरुद्ध आत्मसम्मानपूर्ण प्रतिरोध का प्रतीक बन जाती है। दिनकर के काव्य में वीर-रस जनमानस को कायरता और निष्क्रियता से मुक्त कर संघर्ष और स्वाभिमान की चेतना से भर देता है। उनकी कविता राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाने का कार्य करती है और जनता को अपनी शक्ति पहचानने के लिए प्रेरित करती है। *हुंकार* में कवि स्पष्ट रूप से चेतावनी देता है—

"जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध।"[5]

यह पंक्ति यह संकेत देती है कि अन्याय के समय मौन रहना भी अपराध है। इस प्रकार दिनकर का वीर-रस राष्ट्रीय अस्मिता को जनसत्ता, लोकतांत्रिक चेतना और नैतिक साहस से जोड़ता है, जिससे उनकी कविता राष्ट्रीय संघर्ष की सशक्त अभिव्यक्ति बन जाती है।

## 4.2 पौराणिक और ऐतिहासिक प्रतीक

रामधारी सिंह 'दिनकर' ने पौराणिक और ऐतिहासिक पात्रों को आधुनिक संदर्भों में पुनर्व्याख्यायित कर उन्हें समकालीन अर्थ प्रदान किए। *रश्मिरथी* का कर्ण केवल महाभारत का पात्र नहीं रह जाता, बल्कि वह सामाजिक विषमता, उपेक्षा और संघर्ष से जूझते मानव का प्रतीक बन जाता है। कर्ण के माध्यम से दिनकर प्रतिभा और योग्यता के बावजूद अवसरों से वंचित व्यक्ति की पीड़ा को अभिव्यक्त करते हैं। इसी प्रकार *कुरुक्षेत्र* में महाभारत का युद्ध बाह्य संघर्ष से अधिक आंतरिक नैतिक द्वंद्व का रूप ले लेता है, जहाँ हिंसा, कर्तव्य और करुणा के प्रश्न उभरते हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से दिनकर भारतीय सांस्कृतिक परंपरा को आधुनिक राष्ट्रीय चेतना और नैतिक आत्ममंथन से जोड़ते हैं।

## 4.3 सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

रामधारी सिंह 'दिनकर' की राष्ट्रीय अस्मिता की अवधारणा गहराई से भारतीय संस्कृति में निहित है। उनके लिए राष्ट्र केवल राजनीतिक सत्ता या भौगोलिक सीमा का नाम नहीं है, बल्कि वह एक जीवंत सांस्कृतिक चेतना है, जो सहस्राब्दियों से विकसित होती हुई भारतीय जीवन-दृष्टि में निहित है। दिनकर संस्कृति को राष्ट्र की आत्मा मानते हैं और विश्वास करते हैं कि सांस्कृतिक आत्मबोध के बिना कोई भी राष्ट्र सशक्त और स्थायी नहीं हो सकता। इसी कारण उनकी कविता में राष्ट्रीय पहचान सांस्कृतिक मूल्यों, परंपराओं और नैतिक आदर्शों से जुड़ी हुई दिखाई देती है।

दिनकर ने अपनी प्रसिद्ध कृति *संस्कृति के चार अध्याय* में भारतीय संस्कृति की समन्वयात्मक और सहिष्णु प्रकृति को विशेष रूप से रेखांकित किया है। वे स्पष्ट रूप से कहते हैं—

"भारत की संस्कृति न तो एकांगी है और न ही संकीर्ण; वह विभिन्न धाराओं के समन्वय से विकसित हुई है।"[6]

यह कथन भारतीय संस्कृति की उस व्यापक दृष्टि को उजागर करता है, जिसमें विविधता को स्वीकार करने और विरोधों को समेटने की क्षमता निहित है। दिनकर के अनुसार यही समन्वय भारतीय राष्ट्र की वास्तविक शक्ति है।

यही सांस्कृतिक दृष्टि दिनकर की कविता में राष्ट्रीय अस्मिता को व्यापक, मानवीय और समावेशी बनाती है। उनकी राष्ट्रीय चेतना किसी एक वर्ग, धर्म या विचारधारा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह सम्पूर्ण मानवता के कल्याण की आकांक्षा से जुड़ जाती है। इस प्रकार दिनकर की राष्ट्रीय अस्मिता सांस्कृतिक आत्मगौरव और उदार मानवतावाद का सशक्त स्वर प्रस्तुत करती है, जो उनकी कविता को कालजयी प्रासंगिकता प्रदान करता है।

## 4.4 सामाजिक न्याय और जनचेतना

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता में राष्ट्रीय चेतना केवल राष्ट्रप्रेम या सांस्कृतिक गौरव तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह समाज के वंचित और शोषित वर्गों की पीड़ा से गहरे रूप में जुड़ी हुई है। किसान, मजदूर, दलित और सामान्य जन उनकी कविता में राष्ट्र की वास्तविक शक्ति के रूप में उपस्थित होते हैं। दिनकर मानते हैं कि जिस राष्ट्र की नींव सामाजिक असमानता और शोषण पर टिकी हो, उसकी राष्ट्रीय अस्मिता कभी पूर्ण नहीं हो सकती। इसी कारण उनकी कविता में आर्थिक विषमता, वर्ग-संघर्ष और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध तीखा प्रतिरोध स्वर देखने को मिलता है।

दिनकर की कविता किसानों और मजदूरों के श्रम को राष्ट्र-निर्माण का आधार मानती है। वे श्रमशील वर्ग को केवल सहानुभूति का पात्र नहीं बनाते, बल्कि उसे परिवर्तन की शक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी काव्य-दृष्टि में जनसाधारण इतिहास की निष्क्रिय इकाई नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव का सक्रिय वाहक है। इस दृष्टि से उनकी कविता लोकतांत्रिक मूल्यों से गहराई से जुड़ी हुई दिखाई देती है।

इस प्रकार दिनकर की कविता राष्ट्रीय चेतना को अभिजात वर्ग की सीमाओं से बाहर निकालकर जनवादी आधार प्रदान करती है। सामाजिक समानता, न्याय और मानवीय गरिमा को राष्ट्रीय अस्मिता का अनिवार्य तत्व मानकर वे राष्ट्र की संकल्पना को अधिक व्यापक और लोकतांत्रिक बनाते हैं। यही जनमुखी दृष्टि दिनकर की कविता को स्थायी महत्त्व प्रदान करती है।

## 5. स्वतंत्रता-उत्तर कविता में राष्ट्रीय अस्मिता

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी रामधारी सिंह 'दिनकर' की राष्ट्रीय चेतना शिथिल नहीं पड़ती, बल्कि वह अधिक परिपक्व, आलोचनात्मक और उत्तरदायी रूप धारण कर लेती है। स्वतंत्रता से पूर्व जहाँ उनकी कविता का मुख्य स्वर विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष और प्रतिरोध था, वहीं स्वतंत्रता के पश्चात उनका ध्यान राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया, नैतिक मूल्यों के क्षरण और सत्ता की भूमिका पर केंद्रित हो जाता है। दिनकर मानते हैं कि राजनीतिक स्वतंत्रता तभी सार्थक है, जब वह नैतिकता, न्याय और उत्तरदायित्व से जुड़ी हो। इसी कारण उनकी कविता स्वतंत्र भारत की उपलब्धियों के साथ-साथ उसकी विफलताओं पर भी तीखा प्रश्न उठाती है।

कृति *परशुराम की प्रतीक्षा* में दिनकर स्वतंत्र भारत में व्याप्त अवसरवाद, भ्रष्टाचार और नैतिक पतन पर व्यंग्यात्मक दृष्टि डालते हैं। यहाँ परशुराम अन्याय के विरुद्ध जाग्रत चेतना और प्रतिरोध की प्रतीकात्मक शक्ति के रूप में उपस्थित हैं। कवि लिखता है—

"जब शस्त्र सो जाते हैं और अन्याय जागता है, तब परशुराम की प्रतीक्षा होती है।"[7]

यह पंक्ति स्पष्ट करती है कि स्वतंत्रता के बाद भी यदि समाज अन्याय और कायरता में डूबा रहे, तो प्रतिरोध अनिवार्य हो जाता है।

इस प्रकार दिनकर की कविता स्वतंत्र भारत में सत्ता की जवाबदेही तय करती है और राष्ट्र को आत्ममंथन की प्रेरणा देती है। उनकी आलोचनात्मक राष्ट्रीय दृष्टि राष्ट्रप्रेम को अंधभक्ति नहीं, बल्कि सजग नागरिक चेतना का रूप प्रदान करती है, जिससे उनकी कविता आज भी प्रासंगिक बनी हुई है।

## 6. आलोचनात्मक दृष्टि

हिंदी साहित्य के अनेक प्रमुख आलोचकों ने रामधारी सिंह 'दिनकर' को 'राष्ट्रीय कवि' और 'युगचेतना का स्वर' कहकर संबोधित किया है। यह संज्ञाएँ केवल भावनात्मक प्रशंसा नहीं हैं, बल्कि दिनकर की उस काव्य-दृष्टि का संकेत देती हैं, जो अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक यथार्थ से गहरे रूप में जुड़ी हुई है। उनकी कविता स्वतंत्रता आंदोलन, जनसंघर्ष और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रियाओं की सजीव अभिव्यक्ति बनती है। इसी कारण उनकी काव्य-वाणी अपने युग की आकांक्षाओं और अंतर्विरोधों को मुखर स्वर प्रदान करती है।

प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह ने दिनकर की कविता के स्वरूप को रेखांकित करते हुए कहा है कि दिनकर की कविता भावुक राष्ट्रवाद की सीमा में नहीं बंधती, बल्कि वह संघर्षशील और सक्रिय चेतना को अभिव्यक्त करती है। नामवर सिंह के अनुसार, दिनकर राष्ट्रप्रेम को निष्क्रिय भावना नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक शक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी कविता जनमानस को अन्याय और शोषण के विरुद्ध खड़ा होने का साहस प्रदान करती है।

यद्यपि कुछ आलोचकों ने दिनकर की कविता पर वक्तृता और ओज की अधिकता का आरोप लगाया है, फिर भी यह स्वीकार करना होगा कि उनकी राष्ट्रीय अस्मिता की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। उनकी कविता जनता को आत्मगौरव, संघर्ष और उत्तरदायित्व का बोध कराती है, जिससे वह समय और समाज की कसौटी पर खरी उतरती है।

## 7. निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता में राष्ट्रीय अस्मिता बहुआयामी और सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुई है। उनकी काव्य-दृष्टि में राष्ट्र केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का प्रतीक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक

आत्मगौरव, सामाजिक समानता और नैतिक उत्तरदायित्व की समग्र संकल्पना है। दिनकर की कविता राष्ट्रीय स्वाभिमान को जाग्रत करती है और जनता को आत्मसम्मान तथा संघर्ष की चेतना से भर देती है। उनकी रचनाएँ राष्ट्र को निष्क्रिय भावुकता से बाहर निकालकर सक्रिय और सजग चेतना के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

दिनकर की कविता में सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक न्याय का सशक्त समन्वय दिखाई देता है। वे भारतीय संस्कृति की समन्वयात्मक और सहिष्णु परंपरा को राष्ट्रीय अस्मिता का आधार मानते हैं और साथ ही शोषित, वंचित और उपेक्षित वर्गों की पीड़ा को राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में लाते हैं। इस प्रकार उनकी राष्ट्रीय दृष्टि अभिजात वर्ग तक सीमित न रहकर जनसाधारण से जुड़ जाती है, जिससे उनकी कविता जनवादी और लोकतांत्रिक स्वर ग्रहण करती है।

आज के समकालीन संदर्भ में भी दिनकर की राष्ट्रीय दृष्टि उतनी ही प्रासंगिक प्रतीत होती है। जब राष्ट्र विभिन्न सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक चुनौतियों से जूझ रहा है, तब दिनकर की कविता आत्ममंथन, उत्तरदायित्व और संघर्ष का संदेश देती है। हिंदी साहित्य में उनका योगदान राष्ट्रबोध की दृष्टि से निश्चय ही अमूल्य और कालजयी है।

## संदर्भ सूची

[1]. शुक्ल, रामचंद्र. *हिंदी साहित्य का इतिहास*. नागरी प्रचारिणी सभा, 1929.
[2]. दिनकर, रामधारी सिंह. हुंकार. लोकभारती प्रकाशन, 1938.
[3]. दिनकर, रामधारी सिंह. कुरुक्षेत्र. साहित्य अकादेमी, 1946.
[4]. दिनकर, रामधारी सिंह. परशुराम की प्रतीक्षा. राजकमल प्रकाशन, 1958.
[5]. दिनकर, रामधारी सिंह. हुंकार. लोकभारती प्रकाशन, 1938.
[6]. दिनकर, रामधारी सिंह. संस्कृति के चार अध्याय. राजकमल प्रकाशन, 1956.
[7]. दिनकर, रामधारी सिंह. परशुराम की प्रतीक्षा. राजकमल प्रकाशन, 1958.

***Cite this Article:***
*वंदना कुमावत, "**रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता में राष्ट्रीय अस्मिता**", **International Journal of Humanities, Commerce and Education, ISSN**: 3108-0456 (Online), Volume 2, Issue 1, pp. 35-40, January 2026.*
***Journal URL:*** https://ijhce.com/
***DOI***: https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i1.28